P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-IX* May-2016

शहरी परिवेश में ग्रामीण युवा प्रवृत्ति

कुलदीप कुमार
शोधार्थी,
समाजशास्त्र विभाग
लखनऊ यूनिवर्सिटी,
लखनऊ

सारांश

शहरी परिवेश एक एसा परिवेश है। जहाँ अत्याधिक जनसंख्या की अधिकता, यातायात के साधन, गतिशीलता व परिवर्तनशीलता तथा विविधता अधिक मात्रा में पाया जाता है। भारत की ग्रामीण व शहरी जनता में जमीन आसमान का अन्तर दिखाई पडता है । उनके रहन सहन आधार विचार में एक लम्बा फासला दिखाई देता है यही नगरीय जीवन शैली एक एसा आकर्षण उत्पन्न करती है। जिससे ग्रामीण युवा आकर्षित होकर गांवो से प्रव्रजन कर शहर की ओर सामाजिक, आर्थिक, रोजगार, शिक्षा के अच्छे अवसर और अच्छो सामाजिक स्थिति अवसरों को लेकर होता है। ग्रामीण युवा जिसका सामाजोकरण परम्परागत मूल्यों द्वारा होता है। जब वह शिक्षा के अच्छे अवसरों की तलाश में शहर आता है, तो वह तो एक नई प्रकार के आधुनिकतम परिवेश से उसका परिचय होता है। उसे शहरी परिवेश में सामज्स्य स्थापित करने म विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

मुख्य शब्दः शहरी परिवेश,ग्रामीण युवा,संक्रमण,मूल्य,गतिशीलता व परिवर्तनशीलता

प्रस्तावना

भारत एक विशाल देश है। जिसको लगभग 69 प्रतिशत जनता गाँव में रहती है और भारत की ग्रामीण व शहरी जनता में जमीन आसमान का अन्तर दिखाई पडता है उनके रहन सहन आधार विचार में एक लम्बा फासला दिखाई देता है एक तरह से देखे तो जनसख्या का एक बहत बड़ा भाग मानव संसाधन है और युवाओ की ज्यादा सख्या के कारण भारत एक को एक युवा देश है। अंग्रेजों के आगमन ने उत्पादन पद्धति में परिवर्तन उत्पन्न कर की प्रक्रिया उत्पन्न नगरों के विकास की, नगरों के विकास ने एसे परिवेश को उत्पन्न किया जिसे शहरी परिवेश की सज्ञा दी जा सकती है। शहरी परिवेश एक एसा परिवेश है। जहाँ अत्याधिक जनसंख्या की अधिकता, यातायात के साधन,गतिशीलता व परिवर्तनशीलता तथा विविधता अधिक मात्रा में पाया जाता है। यह नगरीय जीवन का उदाहरण है नगरीयता को परिभाषित करते हुये '**लुई वर्थ**' कहते है कि नगरीयता जीवन की एक विशिष्ट जीवन शैली है। यह शैली ग्राम्य जीवन शैली से भिन्न होती है। यह एक दशा या परिरिस्थतियों का पुंज है, जिसमें व्यक्ति नगरीय जीवन–शैली को अपनाते ह।

यही नगरीय जीवन शैली एक एसा आकर्षण उत्पन्न करती है। जिससे ग्रामीण युवा आकर्षित होकर गांवो से प्रव्रजन कर शहर की ओर सामाजिक, आर्थिक, रोजगार, शिक्षा के अच्छे अवसर और अच्छो सामाजिक स्थति अवसरों को लेकर होता है। ग्रामीण युवा जिसका सामाजोकरण परम्परागत मूल्यों द्वारा होता है। जब वह शिक्षा के अच्छे अवसरों की तलाश में शहर आता है तो वह तो एक नई प्रकार के आधुनिकतम परिवेश से उसका परिचय होता है। उसे शहरी परिवेश में समंज्स्य स्थापित करने म विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिसमें समंज्स्य, आवास की समस्या, प्रतिस्पर्धा, प्रातियोगिता, बेरोजगारो आदि प्रमुख ह।

भारत में ग्रामोण युवाओं की वर्तमान स्थिति

भारत में ग्रामीण क्षेत्र के युवा निम्नलिखित स्थिति के कारण शहरों की ओर प्रवजन कर रहे है जो निम्नलिखित है–

कृषक परिदृश्य

जी0 डी0 पी0 के अनुसार कृषि क्षेत्र में जमींदारी प्रतिदिन घटती जा रही है। इसका परिणाम बेरोजगारो में वृद्धि हो रही है। इस कारण ग्रामीण युवाओं कार्य के लिए शहरों की तरफ प्रवास कर रहें हैं।

ग्रामीण नौजवानों की अनिपुणता

ग्रामीण युवाओं में अनिपुणता खराब शैक्षिक व्यवस्था, प्रतिस्पर्धा, और अप्रतिबद्ध अध्यापक उच्च शिक्षा के लिए पैसों की कमी के कारण ग्रामीण युवाओं में अकुशलता में वृद्धि अधिक मात्रा में पायी जाती है।

ग्रामीण लोगों का दृष्टिकोण

ग्रामीण परिवारों के लिए आर्थिक निरन्तरता एक महत्वपूर्ण बिन्दु है और इस कारण से आज के युवाओं ज्ञान से ज्यादा पर अत्यधिक ध्यान दिया जाता है। उनका दृष्टिकोण आर्थिक आय अधिक होता है ज्ञान प्राप्त करना नहीं।

शहरीकरण

भारत तेजी से बढ़ती हुई आर्थिक शक्तियों के रूप में उभर रहा है। नगरीकरण की घटना बहुत तेजी से हो रही है। परन्तु इससे ग्रामीण युवाओं की शायद ही कोई मद्द कर पायी हो। क्योंकि उनमें अन्ततः निपुणता की कमी है। गाँवों में गरीबी, बेकारी, ऋणग्रस्तता एवं कृषि से सम्बंधित अनेक समस्याएं है। जिस वजह से ग्रामीण युवा नगरीय तड़क–भड़क और सुविधाओं को देखकर नगरों की ओर पलायन कर रहे है।

अकृषि क्षेत्र

जमीदारी घटने के कारण भूमिहीन लोगों की संख्या बढ़ रही है। इस कारण से अकृषि क्षेत्र वाले पर ज्यादा निर्भरता हो रही है। जैसे गाय–भेड़ पालन और मुर्गीपालन इत्यादि। ग्रामीण युवाओं में कृषि की अपेक्षा व्यवसाय के लिए प्रबन्धन और व्यवसायिक कुशलता की कमी है।

ग्रामीण संगठन

ग्रामीण सहकारी और अन्य विकासशील संगठन बहुत ही जटिल वातावरण में कार्य कर रहे है। ऐसे संगठन को चलाना बहुत मुश्किल है। क्योंकि गतिशीलता के नियमों की कमी, ग्रामीण अकुशलता समाज में देखने को मिलती है। जिस कारण ग्रामीण युवा शहरों की ओर प्रवजन कर रहा है।

इन सब के बाद भी ग्रामीण समाज में 6 वर्षो में एक बड़ा बदलाव भी आया जो उम्मीद की किरण है। आज ग्रामीण भारत की खपत 40 प्रतिशत है, जैसे–जैसे खपत बढ़ रही है। ग्रामीण भारत एक शक्ति की तरह उभर रहा है। इस तरह चुनौती भी है जिसमें विभिन्न संस्थाओं जैसे सरकार स्वयम सेवी संगठनों सभ्य समाज और कारपोरेट सेक्टर की भी इनके विकास में भूमिका है परन्तु आवश्यकता इस बात की है कि इसके मैनेजर की जो ग्रामीण गतिशीलता को समझ सकें। बहुत कम लोग है जो यह जानते हैं कि ग्रामीण विकास के लिए यह बहुत आवश्यक है जिससे ग्रामीण विकास कर आर्थिक बढ़ोतरी कर सकें।

युवा मित्र संस्था शुरू से आखिर तक ग्रामीण अजीविका प्रबन्धन से ग्रामीण समाज के विकास के लिए एक बौद्धिक तंत्र को विकसित किया है। जो ईर्ष्या के वातावरण में ग्रामीण समाज की सहायता कर जीविका के अवसर उत्पन्न करती है जो ग्रामीण क्षेत्र को विकास को सुनिश्चित करती है।

भारत में प्रवजन

इस समय देश में लोगों की गॉवों को छोड़ कर शहर जाने की प्रवृति है। सर्वप्रथम स्वतन्त्रता के पश्चात् 1951 में जनगणना के आकड़ों के अनुसार स्पष्ट था कि 1941 से 1951 तक के दशक में शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन प्रवृति अधिक रही। इस दौरान कुल जनसंख्या का लगभग 3.4 प्रतिशत भाग ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन करके शहरी क्षेत्रों में जा बसा। इसके बाद के दो दशकों तक यह प्रवृति अपेक्षाकृत कम रहने के बाद 1971 से 1981 के बीच पलायन की दर पुनः 3.4 रही। कुल मिलाकर 1901 में कुल जनसंख्या का 89.2 प्रतिशत भाग ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता था। अर्थात 10.8 प्रतिशत शहरों में निवास करता था। वहाँ 1992 में 74.3 प्रतिशत भाग में शेष 25.7 प्रतिशत शहरी क्षेत्र में निवास करने लगा। वहीं 2001 में पलायन की प्रवृत्ति दर 29.9 थी, जो 2011 में 17.7 प्रतिशत रही। इस पलायन वादी प्रवृति ने देश की विकास की दर को प्रभावित किया है।

प्राचीन काल से ही एक स्वस्थ समाज के निर्माण में युवाओं की भूमिका रहो है। स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए युवाओं को शिक्षित कर तैयार किया जाता रहा है। देश और समाज के पूर्ण विकास के लिए एसी शिक्षा आवश्यक है कि जिससे युवा अपने सार्वजनिक जीवन में सामजस्य स्थापित कर न सिर्फ अपना बल्कि देश व समाज के विकास में अपना योगदान प्रदान कर सकें। युवाओं के योगदान से देश ही नहीं वरन् विश्व की अनेकों समस्याओं का सरलता से निवरण किया गया है। युवाओं ने विश्व और देश पर हुए सामाजिक एवं राजनीतिक परिवर्तनों में अपना अमूल्य योगदान प्रदान करते रहे हैं। इसलिए युवाओं को समाज में सबसे ज्यादा ऊर्जावान और प्रतिभावान समझा जाता है। इस कारण युवा एसी शक्ति है जिसकी ऊर्जा को यदि समुचित दिशा निर्देशन के साथ प्रयुक्त नहीं किया जाता है। तो वह भटकाव की ओर अग्रसर होता है जिसके कारण यह समाज के लिए काफी घातक हो जाता है। जिसका भारतीय युवा, मुख्यतः विद्यार्थी वर्ग भी इसका अपवाद नहीं है।

विकासशील समाज में युवाओं को सामाजिक परिवर्तन का केन्द्र माना जाता रहा है। युवा सक्रीयता सभी समाज व विभिन्न कालों में देखने को मिलती है जिसके मनौवैज्ञानिक व सामाजिक कारण सदैव एक जैसे रहे है।

वर्तमान समय में नगरीकरण, औद्योगोकरण, पश्चिमीकरण,भूमण्डलोकरण,तकनीकी विकास तथा संचार के साधनों के अत्याधिक विकास ने समाज में अनेकों अत्याधिक तीव्र परिवर्तन घटित हुए ह। इन परिवर्तनों ने युवाओं के सम्मुख अनेका समस्यायें उत्पन्न कर दी ह, और परिस्थितियों को भी संघर्षात्मक बना दिया है। क्योंकि युवाओं में परिवर्तन के प्रति ग्रहणता अधिक होती हैं शैरेफ और केन्द्रिल का मानना है कि जब समाज में तीव्र संक्रमण होता है तो उसके कारण परिस्थितियों में होने वाला भ्रम ''जो स्वयं वयस्क स्थिति प्राप्ति के प्रयास में पहले ही संक्रमण की स्थिति में होते है उनके लिए अतिरिक्त समस्या उत्पन्न का देता है।

संक्रमण की यह स्थिति उनमें भावनात्मक अस्थिरता, अति संवेदनशीलता, तनाव और विरोधा भाषो व्यवहारों को उत्पन्न करता है। समकालीन युवा विशेषकर शिक्षित युवा सामाजिक संस्थाओं के प्रति सहायक होता है अगर युवाओं को सही दिशा में पर्याप्त मार्गदर्शन मिले तो वे समाज की सभ्यता व संस्कृतिक को उच्च मूल्य प्रदान कर सकते है। और यह देश के हित में है कि युवाओं की समस्याओं और उनकी आवश्यकताओं का विशेष ध्यान रखा जायें। प्रत्येक देश के वातावरण में भिन्नता,

सामाजिक स्थिति, और शिक्षा पद्धति युवाओं पर अलग–अलग प्रभाव डालती है। इसलिए युवाओं के मस्तिष्क पर इन वर्तमान परिर्वतन, विभिन्नता के प्रभाव का एक सामाजिक व वैज्ञानिक अध्ययन होना आवश्यक है।

अध्ययन के उद्देश्य

युवाओं को ध्यान में रखते हुये इस शोध कार्य में निम्नलिखित उद्देश्य का निर्धारण किया गया है।

शहरी परिवेश मे ग्रामीण युवाओ के बदलते व्यवहारिक प्रतिमान का अध्ययन करना।

अध्ययन विधि

युवाओं से सम्बन्धित प्रस्तुत शोध कार्य में विवेचनात्मक शोध प्ररचना का प्रयोग किया गया है, जो युवाओं से सम्बन्धित विभिन्न विद्वानो के अवधारणाओ के आधार पर युवाओ के व्यवहार को समझने का प्रयास किया गया है ।

तथ्यों का संकलन

प्रस्तुत शोध कार्य में द्वितीयक प्रकार के समन्को का अवश्यकतानुसार प्रयोग किया गया है। इसके लिए द्वितीयक स्त्रोत के रूप में प्रकाशित व अप्रकाशित प्रलेखों, पत्र–पत्रिकाओं, डायरियों, सरकारी व गैर सरकारी प्रतिवेदनों, अध्ययनों, संक्षिप्त बुकलेटों पुस्तकों तथा इन्टर नेट ग्रन्थों से जानकारी एकत्र की गयो है।

युवा अवधारणा

युवा अवस्था एसी अवस्था है जिसमें बालपन का अल्हड़पन और किशोर अवस्था का उत्साह और वैचारिक प्रस्फूटन का मिश्रण होता है। समान्यतः युवावस्था व किशोर अवस्था की व्याख्या जैवकीय सन्दर्भ में की जाती है और इस अवस्था को जीवन चक्र का एक पड़ाव माना जाता है। युवा अवस्था की धारणा विभिन्न समाजो में भिन्न होती है। जिसका निर्धारण सामाजिक और संस्कृतिक परिपाटी के अनुसार होता है। इस विषय पर आधारित बालक और बालिकाओं की आयु में भी भिन्नताएं है। कई समाजों में किशोर अवस्था और युवा अवस्था में भेद किया गया है। और किशोर अवस्था को युवा अवस्था के पूर्व की अवस्था माना गया है। सभी समाजों में इसके बारे में एक मत है। कि युवा अवस्था बाल्यकाल और प्रौढ़ अवस्था के बीच की अवस्था है।

समाजशास्त्रीय इस अवस्था की व्याख्या एक अर्जित प्रस्थिति के रूप में करते है। युवा शब्द के अर्थ पर विद्वानों का एक मत नहीं है। बहुत से विचारक आयु के आधार पर इसे परिभाषित करते है तो कुछ इसकी व्याख्या मनोवैज्ञानिक तौर पर करते है तथा समाज शास्त्रीयों द्वारा इसकी व्याख्या समाजशास्त्रीय समूह, आयु वर्ग समूह के रूप में करते ह।

मोरे के अनुसार ''युवााओं को उनकी उम्र के आधार पर परिभाषित करना एक अपूर्ण प्रयास होगा क्योंकि यह विवाद का कारण हो सकता है। इसके साथ ही युवाओं को परिभाषित करने के लिए कोई निर्धारित मापदण्ड नहीं है। वे आगे एक समान्तर शब्द वयस्कता का विस्तृत करते है जो कि 'युवा की परिभाषा' को और जटिल बना देता है।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने युवा आयु वर्ग को 15–24 वर्ष तक की आयु समुह को तथा राष्ट्र मण्डल से जुड़े देशों ने इसे 15 से 29 वर्ष आयु वर्ग को चिन्हित किया है।

भारत में संवैधानिक परिभाषाए अप्रत्यक्ष रूप से 18 वर्ष की आयु के व्यक्ति को युवा मानती है। क्योंकि 18 वर्ष के उपरान्त ही वह अपना मतदान कर सकता है। इसके साथ ही जब युवा नीति का 2003 में निर्माण हुआ था। उस समय युवाओं के लिए 13 से 35 वर्ष की आयु समूह को युवा वर्ग की श्रेणी में रखा गया था। राष्ट्रीय युवा नीति के अर्न्तगत ही राष्ट्रीय स्तर पर युवाओं के दो समूह में विभाजित करते हुए उनमें से 13 से 19 वर्ष के लिए किशोर आयु समूह तथा 20 से 35 वर्ष की आयु समूह को युवा वर्ग में वर्गीकृत किया गया है।

इस प्रकार युवाओं के आयु के सम्बन्ध में अलग–अलग परिभाषाय होने के कारण कोई भी व्यक्ति जो 10 से 30 वर्ष की आयु वर्ग का हो युवा माना जा सकता है।

साथ ही साथ कुछ विचारकों का मानना है कि युवा का सम्बन्ध प्राणी शास्त्रीय आयु से नहीं मस्तिष्क अवस्था से है। मनोवैज्ञानिक के दृष्टिकोण में युवा अवस्था तत्परता की वह अवस्था है। जिसमें व्यक्ति की सम्पूर्ण शक्तियों और क्षमताएं पूर्व नियोजित नहीं हो सकती ह। उनके मत में कोई भी एसा व्यक्ति जो ऊर्जा युक्त और सतर्क है, युवा भावनाओं से ओत–प्रोत माना जा सकता है। चाहे उसकी आयु कितनी ही हो।

युवा संस्कृति

युवा अवस्था/यौवन काल मुख्यतः औद्योगिक समाजों की एक विशिष्ट घटना है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद एक समाजिक श्रेणी के रूप में युवाओं के प्रति आधिक ध्यान दिया जान लगा क्योंकि इस जटिल समाज में मानव विकास की इस अवस्था को विशेष चुनौती पूर्ण माना जाने लगा। इस कारण युवाओं को एक समस्या के रूप में देखा गया और इनके विकास के लिए अधिक कार्य किये जाने लगे जिससे इनका स्वस्थ समाजिक और मानसिक सन्तुलित विकास हो सकें विभिन्न देशों के युवाओं ने अपने व्यवहार, पहनावें, बातचीत के तरीको, से अपनी एक अलग पहचान बना ली है। यह बात भारतीय युवाओं जो कि नगरो में रहने वाले युवाओं पर भी लागू होती है।

युवाओं के इस पृथक व्यवहार के लिए युवा संस्कृति शब्द अत्यधिक प्रचलित है युवा संस्कृति में युवाओं के समस्त मानदण्डों को सम्मिलित किया जा सकता है जिसमें 15–30 वर्ष के व्यक्ति के सदस्य हिस्सा लेते ह और उसे बनाये रखते ह।

युवा संस्कृति एक विशिष्ट प्रकार की उप संस्कृति है जो मुख्य रूप से संगीत फैशन शैली तथा अवकाश के क्षणों के प्रयोग पर केन्द्रित होती है यह एक आराम की संस्कृति है। इसमें परिवारिक सदस्यों की अपेक्षा हम–आयु वर्ग के समीपों के साथ समाजिक सम्बन्धों का समस्त ताना–बाना बुना होता है। इस संस्कृति में युवा कुंठा, कई स्वरूपों के विचलन और अवज्ञा की भावना, समाजिक मूल्यों के प्रति विद्रोह की भावना से ग्रसित होते है। अपराध और विचलन के अध्ययनों से यह बात स्पष्ट होती है कि विचलनकारी व्यवहारों के अंकुर इसी अवस्था में फूटते ह।

युवा संस्कृति अथवा उपसंस्कृति का सामान्य लक्षण सुखवादी प्रवृत्ति, उत्तरदायित्व हीन –व्यवहार और आत्म अभिव्यक्ति मूलक आचरण होता है। इस उपसंस्कृति को प्रायः युवा और किशोर की दृष्टि से देखा जाता है जो कि मानव की संस्कृति से अनुवांशिक साम्यतः रखते हुए उससे स्वतंत्र एवं भिन्न है। उपसंस्कृति युवाओं के इस सहज आचरण को आदर्श मानती है। जैसा कि कहा जाता है युवक विचलित अपराधी और परिवर्तित हैं, तर्कसंगत नही। विभिन्न देशों के युवाओं की उपसंस्कृति में भिन्नता दिखाई पड़ती है। क्योंकि उपसंस्कृति भी समाज और समूह की संस्कृति के अनुसार होती है। समूह की वेश–भूषा, रहन–सहन, धार्मिक विश्वास आदि में विभिन्नताः होना अनिवार्य है। उदाहरण के लिए अमेरिका के युवकों की उपसंस्कृति में लोकप्रिय गीत रांक एण्ड रोल, सफरी फोनोग्राम सिने अभिनेत्रियां, रोमांचकारी प्रेम, मोटर साइकिल, मधपान, खेल क्लब, गुटबन्दी तथा प्रेमियों की गाली आदि शामिल है। परन्तु यह सब भारत जैसी देश के युवाओं की उपसंस्कृति में भिन्न हैं यही अन्य देशों की युवा उपसंस्कृति पर भी लागू होती है भारतीय युवा संस्कृति में मैंत्री, गुटबन्दी, होटलों कैन्टीन में चाय काफी की चुस्कियां मस्ती, चलचित्र देखना, सिने अभिनेत्रियों के नाम एव ंपते याद करना, सहित्य मे अभिरुचि,सिनेमा कि लोकप्रिय सगोत, बालिकाओं एवं युवतियों को घूरना, कमेन्ट पास करना, छेड़खानी, गुप्त माघपान तेज रफतार में मोटर साइकिल चलाते हुये फोन पर बात करना एंव अश्लील आचरण करना आदि देखा जा सकता है।

काफमैन ने (1970) ने युवा संस्कृति पर कहा है कि ''यदि हम वर्तमान युवा पीढ़ी की चलचित्रों की पीढ़ी का नाम दे तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी। यह पीढ़ी चलचित्रों में परिवक्व हुई पीढ़ी है। इस पीढ़ी ने चलचित्र को गम्भीरता पूर्वक अपनाया है। "चलित अधुनिक प्रचार साधनों में एक ऐसा प्रभावशाली माध्यम है जो आज विश्व को मनोवैज्ञानिक रूप से छोटा बनाता जा रहा है"। वर्तमान में चलचित्र मनोरंजन एवं संसार का ही साधन न होकर शैक्षिक मूल्य के लिए भी उपयोगी है। युवा खाली समय व्यतीत करने के साधन के अतिरिक्त बाह्य संसार से परिचित कराने का भी साधन है। समय व्यतीत करने की प्रक्रिया में युवक चलचित्र की विषय वस्तुत से अनेक महत्वपूर्ण मूल्यों, ऐतिहासिक धटनाओं एव ंपरम्पराओं आदि को सीखता है।

इस प्रकार युवा संस्कृति को एक उप संस्कृति मानना अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है, क्योंकि युवा संस्कृति को उप संस्कृति मानना इसके प्रति अपेक्षाकृत तटस्थ दृष्टिकोण अपनाना है एक युवा संस्कृति में उप संस्कृति की सभी विशेषताएं विद्यमान होती है। कोहेन (1974) की उप संस्कृति कि व्याख्या के आधार पर पाण्डेय (1984) का मानना है। कि

1. युवा संस्कृति समान समस्याओं से युक्त अनेक युवाओं के मध्य अन्तः क्रिया का अवसर प्रदान करती है। जिसके कारण एक नई युवा सांस्कृतिक स्वरूप का उद्भव होता है और वे युवा संस्कृति के अंग बन जाते है।
2. यह अपने समुदाय की समजस्य की समस्या का हल प्रस्तुत करती है। इनके सदस्यों के बीच समान समझ भावनायें व निष्ठाये होती है।

य़वा अकंक्षायें एवम् मूल्य

युवा अकांक्षायें वह लक्ष्य ह जिसे युवा प्राप्त करने की सोचते और इसके लिये प्रयास करते ह। इस प्रकार युवा अकक्षायें एक प्रकार के लक्ष्य है जिसे युवा आगामी सन्दर्भ में प्राप्त करने के लिए सोचते ह या उसके लिये निर्णय करते ह।

ये अकांक्षये वास्तविक व अदर्शात्मक दोनों प्रकार की हो सकती है।

मूल्य एक ऐसा शब्द है जिसे नैतिक या उपयुक्त व्यवहार के प्रति लोगों के विचारों को मूल्य कहा जाता है ''मूल्य वे संस्कृतिक अथवा व्यक्तिगत धारणयें एवं आदर्श ह जिसके द्वारा वस्तुओं और घटनाओं की एक दूसरे से तुलना की जाती है यह व्यवहार निर्धारण के पैमाना ह जिससे अच्छे बुरे, सही गलत का निर्णय किया जाता है। इसके अतिरिक्त सी0 क्लकहांन (1962) ने मूल्य की ऐसी अवधारणा बताया है जो वांछनीय है। मुखर्जी (1946) ने मूल्य को समाजिक रूप से मान्य व स्वीकृत इच्छाओं एवं लक्ष्यों के रूप में माना है जो सीखने या समाजिकरण के माध्यम से अन्तरीकृत होते हैं, एवं जो आत्मनिष्ठा, प्रतिभा, महात्वकांक्षायें व चयन बनते है।

इस प्रकार मूल्यों क द्वारा ही सभी समूहों, सामाजिक सम्बन्धों का निर्माण होता है तथा व्यक्तियों की सार्थाकता प्रदान की जाती है।

भारत में मूल्यों की जड़े उसकी प्राचीन परम्पराओं और धार्मिकता में सन्निहित है जो संस्कृतिक मूल्यों को निर्धारित करती ह। आधुनिक पश्चिमी संस्कृति के उदारवादी समानतावादी, व्यक्तिवादी, व उपयोगितावाद की शुरूआत ब्रिट्रिश, अवधि से रही है, वर्तमान भारतीय समाज में व्यापक जनसंचार के साधनों के द्वारा संस्कृति आदान प्रदान ने पश्चिमी संस्कृतिक मूल्यों को और उससे प्राप्त सुविधाओं का किसी न किसी रूप में उपयोग हो रहा है। इस संदर्भ में शिक्षा की महात्वपूर्ण भूमिका रही है शिक्षा के द्वारा ही नये मूल्यों का व्यापक और विस्तृत रूप में उदार मनोवृत्ति का विकास हो रहा है वर्तमान में आकड़ों के अनुसार भारत की 65 प्रतिशत जनसंख्या 35 वर्ष तक के युवकों की है और 25 वर्ष तक के युवकों की जनसंख्या 50 प्रतिशत से अधिक है इस प्रकार से असम्भव को सम्भव करने वाली बड़ी शक्ति के कारण भारत को युवा राष्ट्र की संज्ञा दी जा रही है परनतु वर्तमान में तीव्र औद्योगीकरण नगरीकरण व तकनीतिक विकास के कारण आज का युवा नये आयमों में नवीन मूल्यों, प्रतिमानों, आदर्शों का निर्माण कर, नवीन संस्कृति मूल्यों को जन्म दे रहा है। इसके साथ ही शैक्षिक जगत में बड़े–बड़े राजनेता अपने–अपने स्वाथ की पूर्ति के लिए तत्पर दिखाई देते ह।

इस कारण वर्तमान युवा पीढ़ी समाजिक राजनैतिक व्यवस्था से क्षुब्ध व तनाव ग्रस्त है इसके कुछ वास्तविक कारण भी है जिसमें शिक्षा के बाद भी बेरोजगार बने रहने की सम्भावना सबसे जटिल है। इस कारण से नवयुवकों को अपना जीवन निरूददश्य पूर्ण प्रतीत होता है जिससे उनमें दिशाहीनता की स्थिति उत्पन्न होती है और

वह मनमानी करने लगते है। लक्ष्यहीनता के माहौल के कारण उनकी ऊर्जा नकारात्मक दिशा की ओर ले जा कर माग से भटकाव उत्पन्न करती है जिस कारण युवाओं का व्यवहार में धैर्य की कभी, आत्मकेन्द्रिता, नशा, लालच, हिंसा एवं कामरूपता आदि उसके व्यवहार के अंग बनते जा रहे ह। जिस कारण युवा परामपरागत सिद्धान्ता को छोड़कर एवं आदर्शों से किनारा कर, नैतिक मूल्यों को दाव पर लगता दिखई दे रहा है।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था और राजनैतिक व्यवस्था के चलते युवाओं की वर्तमान समस्या एक जटिल समस्या है जिससे की आज का युवा, शिक्षा व्यवस्था से सन्तुष्ट नही है तो राजनैतिक व्यवस्था से संन्तुष्ट रहना हास्य पद ही प्रतित होता है। अतः इससे अपने को बचाने और जिम्मेदारीयों के चलते उसके व्यक्तित्व को खोखला करने की साजिश मानता है निश्चय ही आज के युग में शिक्षा एक आम रिवाज व लोकाचार बन कर रह गई है। जिसका कोई उद्देश्य नही है इस प्रकार आज की शिक्षा ने युवाओं को न तो समय की समझ प्रदान की है। मूल्यहीन को बढ़ाने वाली साबित हो रही है।

आज का युवा भौतिकवादी है और युवा भौतिकतावाद की अंधी दौड़े में फसता चला जा रहा है तकनीकि विकास और आज के युवाओं में संचार क्रन्ति का विकास ने मोबाइल और इण्टर नेट को हर युवा तक यहां तक की छोटे बच्चे की बस्तों में पहुंच गया। इसने एस0एम0एस0 और विडियों के शौक को इतना बढ़ा दिया है कि वह उसी में मस्त ह **निकोलस कार** ने अपनी चर्चित पुस्तक शैलोज में मन–मस्तिष्क पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करते हुए कहा है कि इंटरनेट हमें शनकी बनाता है, तनावग्रस्त करता है और इस पर निर्भरता कायम करता है।

युवा किसी भी देश की सबसे बड़ी पूंजी होती है हमारे समाजिक आर्थिक ढ़ाचे की शक्ति युवाओं पर निर्भर है परन्तु बढ़ता हुआ तनाव, बेरोजगारी या फिर अधुनिकता का चलन उनकी उम्मीदों और सपनों को मिटा रही है।

मध्यम वर्गीय परिवार से आया हुए युवा छात्र अपनी समस्याओं का दायित्व अपने परिवार तथा माता पिता पर रखता है, इसके बाद वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर वर्गीय दृष्टिकोण से दायित्व को सापता है वैसे तो युवा तनाव के लिए सामाजिक आर्थिक, राजनैतिक परिस्थितियां समान रूप से कमोवेश जिम्मदार है, परन्तु युवा वर्ग में व्याप्त तनाव का संवेदिक व्याप्त कारण बेरोजगार परक शिक्षा प्रणाली रही हैं विश्व व्यापत महंगाई के कारण शिक्षा व्यवस्था बेहद खर्चीली है इसके बाद भी कोई रोजगार की गारंटी नहीं ह और जो शिक्षा प्राप्त बड़े से बड़े डिग्री धारक युवक भी सिवाय कलम चलाने के अलावा कोई हुनर नहीं जानते इस दोष पूर्ण परिस्थितियों के कारण युवा पीढ़ी तनाव असन्तोष एवं कुण्ठा से ग्रस्त है। और इसका परिणाम यह है कि, जिस शक्ति को देश के संर्वतोन्मुखी विकास और निर्माण में लगना चाहिये वह जाने अनजाने में देश और समाज के विरोधात्मक कार्यों की करने में संलग्न है।

निष्कर्ष

जहॉ एक तरफ आज युवा संस्कृति मे विचलनवादी व्यवहार कि प्रवत्ति अधिक हो गयी है। वह अधिक हिंसात्मक, आत्म संयम कि कमी उसके व्यवहार मे दिखाई पडती है। जिसमे ग्रामीण युवाओं की संख्या अधिक है। इंटरनेट का उपयोग हुई संस्कृति का विकास युवाओं शनकी बनाता है व तानवग्रस्त करता है और इस पर निर्भरता कायम करता है। इसका यह अर्थ नही है, कि देश की सम्पूर्ण युवा पीढ़ी अपने पद से भटकी हुई है। बल्की अनेकों युवा नये कीर्तिमान स्थापित करने की दिशा में भी अग्रसर है। एक अध्ययन के अनुसार जिन परिवारों के मुखिया अधुनिक बुराईयों जैसे शराब, दिखावा, शान–शाकत से दूर होते ह, उन परिवारें के बच्चे अधिक अनुशासित होते है। ऐसे बच्चों की देश के उच्च शिक्षण संस्थानों में भी अधिक संख्या होती है। जबकि छोटी आयु से ही आधुनिक साधनों व खुली छूट प्राप्त करने वाले परिवारों के बच्चों का ग्राफ काफी नीचे होता है। वास्तव में युवा एक प्रबल शक्ति है। इसकी शक्ति के बल पर ही समाज व देश का विकास सम्भव है। इसके लिए युवाओं की शक्ति को नियंत्रित करना होगा। जिसके नियंत्रण के लिए उनके व्यवहार मनोवृत्तियों समस्याओं व आवश्यकताओ का अध्ययन कर उनके अनुसार योजना बनाकर मूल्य विकास के कार्यक्रम बना कर युवाओं क चारित्रक विकास को प्रोत्सहित कर शक्ति को नियंत्रित किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अलबैक,विलियम–मार्डन पब्लिक ओपीनियनद–पृ0 सं0 –426.
2. http://www.unesco.org/new/en/social-and-human-sciencses /themes/ youth/ youth- definition /; last accessed on dated 12/10/14.
3. http://www.igidr.ac.in/pdf/publication/WP-2014-004. pdf last accessed on dated 12/10/14.
4. ओमेन,टी0 के0. (1970) स्टूडेन्ट यूनियन इन इण्डिया विश्व युवा केन्द्र. नई दिल्ली. पृ0सं0–1.
5. काफमैंन, स्टेनले0 दि अमेरिकन सोशियोलाजिकल रिव्यू भाग–15, नं0–3.
6. गोरे, एम0एस0 इण्डियन यूथ प्रासेस आफ सोशलाइजेशन पृ0सं0–2–3.
7. दुबे, एस0सी0 मॉडर्नाइजेशन एण्ड इट्स एडारिटव डिमान्ड्स आफ इण्डियन सोसाइटी, पृ0सं0–9.
8. नारायण, जय प्रकाश मेरी विचार यात्रा. भाग–2. पृ0सं0– 110.
9. पाण्डेय, राजेन्द्र. (1984).सोशियोलॉजी आफ यूथ. नई दिल्ली. स्टरलिंग पब्लिशर्स,.प्रा0लि0. पृ0 सं0–8.
10. मुखर्जी, आर0के0 .(1964). दि डायमेन्शन आफ वैल्यू.
11. रावत, हरि किशन.(2006). इनसाइक्लोपीडिया आफ सोशलांजी. पृ0सं0.542–544–561–562.
12. लिपसेट,एस0एम0.(1968).स्टूडेन्ट पॉलिटिक्स,पृ0सं0–4.
13. विलियम, पी0 क्वालंस्की एवं राबर्ट सी0 बीलर.(1967). रूरल सोशलॉजी सितम्बर.पृ0सं0–290–301.
14. शैरिफ,एम0 और एच0 केन्दिल.(1947).द साइक्लौजी आफ इगो इन्वोल्वमेन्ट न्यूयॉक जांन विलि एण्ड सन्स. इंक.पृ0सं0–9.
15. सिंह, सत्यदेव, भारतीय युवा आक्रोश, पृ0सं0–33.
16. हिन्दी. (2013).मासिक पत्रिका. योजना.
17. hi-wikipidia-org/wiki date 24/09/2014 युवा भारत वरदान व चुनौती।

18. http://www.thecitizen.in/index.php/OldNewsPage/?Id=6857&A/Lesson/In/History/For/BJP%27s/VK/Singh/Who/Wants/To/Rename/Akbar/Road/To/Maharana/Pratap/Road.
19. https://Published%2FDSeries%2FTables_on_Migration_Census_of_India_2001.aspx&usg=AFQjCNFbVppikYAn2FxDukkoxFKFfNGhgw